ॐ

~~~~~~~~~~

विद्या भवन,बालिका विद्यापीठ,लखीसराय ।

कक्षा-नवम्   विषय- हिन्दी

दिनांक—31/08/2020   कृतिका(रीढ़ की हड्डी)

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

卐 सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया 卐

मेरे प्यारे बच्चों, शुभ प्रभात!

आपका हर दिन खुशियों से भरा हो!

एन सी इ आर टी पर आधारित

रीढ़ की हड्डी

--जगदीश चन्द्र माथुर

(सन् 1917-1978)

रामस्वरूप : (चौंककर) बिजनेस बिज... (समझकर) ओह.... ...अच्छा, अच्छा। लेकिन जरा नाश्ता तो कर लीजिए।

(उठते हैं।)

गो. प्रसाद :यह सब आप क्या तकल्लुफ़ करते हैं!

रामस्वरूप : हँ-हँ- हँ। तकल्लुफ़ किस बात का? हँ -हँ! यह तो मेरी बड़ी तकदीर है कि आप मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए। वरना मैं किस काबिल हूँ।

हँ-हँ!..माफ कीजिएगा जरा अभी हाजिर हुआ।

(अंदर जाते हैं।)

गो. प्रसाद : (थोड़ी देर बाद दबी आवाज में) आदमी तो भला है। मकान-वकान से हैसियत भी बुरी नहीं मालूम होती। पता चले, लड़की कैसी है।

शंकर : जी...

(कुछ खाकर इधर-उधर देखता है।)

गो.प्रसाद : क्यों, क्या हुआ?

शंकर : कुछ नहीं।

गो.प्रसाद : झुककर क्यों बैठते हो? ब्याह तय करने आए हो, कमर सीधी करके बैठो। तुम्हारे दोस्त ठीक कहते हैं कि शंकर की 'बैकबोन'..

(इतने में बाबू रामस्वरूप आते हैं, हाथ में चाय की ट्रे लिए हुए मेज़ पर रख देते हैं।)

गो. प्रसाद:

आखिर आप माने नहीं।

रामस्वरूप : (चाय प्याले में डालते हुए) हँ-हँ-हँ! आपको विलायती चाय पसंद

है या हिंदुस्तानी?

नहीं-नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए। और ज़रा

चीनी ज्यादा डालिएगा। मुझे तो भाई यह नया फैशन पसंद नहीं। एक तो वैसे ही चाय में पानी काफ़ी होता है, और फिर चीनी भी नाम के लिए डाली जाए तो ज़ायका क्या रहेगा? हँ-हँ,

गो. प्रसाद :आखिर आप मनाए नहीं।

रामस्वरूप: (चाय प्याले में डालते हुए) हँ-हँ-हँ! आपको विलायती चाय पसंद है या हिंदुस्तानी?

गो. प्रसाद : नहीं-नहीं साहब, मुझे आधा दूध और आधी चाय दीजिए। और ज़रा चीनी ज्यादा डालिएगा। मुझे तो भई यह नया फैशन पसंद नहीं। एक तो वैसे ही चाय में

पानी काफ़ी होता है, और फिर चीनी भी नाम के लिए डाली जाए तो जायका क्या रहेगा?

रामस्वरूप: हँ-हँ, कहते तो आप सही हैं।

क्रमशः

छात्र कार्य-दी गई पाठ्य सामग्री का शुद्ध-शुद्ध वाचन करें।

धन्यवाद

कुमारी पिंकी “कुसुम”